Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2017: 5.068, www.srjis.com
PEER REVIEWED JOURNAL, AUG-SEPT 2018, VOL- 6/29

'बेसिक शिक्षा परिषद के प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापनरत बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. प्रशिक्षित अध्यापकों के जीवन मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन [जिला एटा (उ0प्र0) के विशेष सन्दर्भ में]

जितेन्द्र सिंह

(शोध छात्र : एजुकेशन),जे. एस. विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद–283135

Abstract

वर्तमान शिक्षा का सबसे बड़ा दोष 'जीवनोपयोगी मूल्यों की शिक्षा का अभाव' होना है। भारत आध्यात्म प्रधान राष्ट्र है; जहाँ का जीवन, मूल्यों से ही प्रारम्भ होता है, और मूल्यों की प्रतिस्थापनाओं में उसका अन्त हो जाता है। क्योंकि परिवर्ती समाज के साथ सामाजिक तथा शैक्षिक मूल्य बदलते रहते हैं; साथ ही मानव की जन्मजात मूल–प्रवृत्तियों एवं रूचियों के आधार पर बच्चों में शैक्षणिक– मूल्य विकसित तथा निर्धारित होते हैं। सामान्य अर्थ में 'मूल्य' एक भावना है जो व्यक्ति द्वारा की जाने वाली विभिन्न शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, साँस्कृतिक तथा सैद्धान्तिक क्रियाओं से जनित होती है।[1] जन्म के समय किसी भी व्यक्ति में किसी प्रकार का निश्चित मूल्य–प्रतिमान नहीं होता। व्यक्ति में आयु वृद्धि के साथ–साथ जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उसी तरह के मूल्य विकसित होते जाते हैं; जैसा परिवेश/पर्यावरण उन्हें मिलता है; और धीरे–धीरे व्यक्ति का 'विशिष्ट व्यक्तित्व व जीवन दर्शन' निर्मित होता जाता है; व्यक्ति के जीवन जीने की विशिष्ट कला/जीवन शैली ही उसके व्यक्तिगत मूल्य (Individual Value) कहलाते हैं।[2] शाब्दिक अर्थ की दृष्टि से आँग्ल भाषा का शब्द 'Value' (वैल्यू) लैटिन शब्द 'वेलियर' से व्युत्पन्न है जिसके आशय हैं– योग्यता, कीमत, महत्व, उत्तमता, उपयोगिता आदि; जिसके द्वारा वस्तु या व्यक्ति सम्मान योग्य बनती है। अर्थात् ऐसा मानवीय गुण जिससे वह महत्वपूर्ण, योग्य तथा उपयोगी सिद्ध (प्रमाणित) हो जाय। इस प्रकार 'जीवन मूल्य' हमारी उन प्रेरणात्मक धारणाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सामाजिक, धार्मिक, नैतिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, राजनैतिक तथा सैद्धान्तिक मूल्यों से ओत–प्रोत होती हैं। इसलिए हम किसी भी व्यक्ति के 'मूल्य विशेष' के आधार पर उस व्यक्ति के क्रियाकलापों, कार्य पद्धति तथा सम्पूर्ण व्यक्तित्व का मूल्याँकन कर सकते हैं। किन्तु मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि हम ''बालक की जन्मजात मूल–प्रवृत्तियों व रूचियों के आधार पर शिक्षागत मूल्यों एवं 'शैक्षिक–उपलब्धि' का निर्धारण कर सकते हैं।''[3] यह भी सत्य है कि परिवर्तित समाज के साथ 'सामाजिक मूल्य' भी बदलते रहते हैं लेकिन यह भी स्वीकार करना होगा कि समाज संरचना में स्थायित्व के लिए कुछ मूल्य 'शाश्वत' होते हैं जिनके त्यागने से समाज में अव्यवस्था (उथल–पुथल) फैलने लगती है। वस्तुतः यह भी सामाजिक विकास की प्रक्रिया है जैसे कि एक पीढ़ी सड़क बनाती है, दूसरी उस पर चलती है, और उसे सुरक्षित रखती है, अर्थात् नई पीढ़ी; पुरानी के कन्धे पर चढ़कर, क्षितिज पर पहुँचकर 'विकास की नई इबारत' लिखती है। इसी तथ्य को चिन्तन–पथ में रखकर शोध–अध्येता ने ''बेसिक शिक्षा परिषद् के बी.टी.सी. तथा विशिष्ट बी.टी.सी. प्रशिक्षित सेवारत अध्यापकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन'' करने का एक 'लघु आनुभविक' (Micro Empirical) प्रयास किया है; जिसकी प्रस्तुति शोध रूप में अग्राँकित है।

निःसन्देह, 'मूल्य–शिक्षा' ही एक ऐसा माध्यम है जो कल के भारत हेतु श्रेष्ठ नागरिकों के निर्माण में प्रासंगिक है क्योंकि मूल्य–शिक्षा बालकों को केवल ज्ञान ही प्रदान नहीं करती अपितु छात्रों के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण तथा चहुँमुखी विकास भी करती है; साथ ही उनके समयानुकूल सापेक्षिक दृष्टिकोण विकसित करते हुए परस्पर एकता, त्याग, सहनशीलता, सद्भाव एवं राष्ट्रीयता की भावनाओं का भी निर्माण करती है; किन्तु आजकल बेसिक शिक्षा व्यवस्थान्तर्गत

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

जीवन मूल्य–शिक्षा का अभाव दृष्टिगोचर हो रहा है।[1] डॉ0 सम्पूर्णानन्द समिति के अनुसार 'मूल्य–शिक्षा' बच्चों के चहुँमुखी विकास का मूल आधार है क्योंकि इसके द्वारा बालकों की जन्मजात शक्तियों, जो अन्तर्निहित होती हैं; का विकास, ज्ञान व कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिमार्जन करते हुए उन्हें एक सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जा सकता है। परन्तु आदर्श शिक्षकों तथा नियोजित शिक्षा व उसके समुचित संसाधनों के अभाव में इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती; क्योंकि शिक्षक ही 'बालक' का वास्तविक पथ प्रदर्शक तथा चरित्र–निर्माता होता है; वशर्ते उसमें (स्वयं में) एक आदर्श अध्यापक के गुण हों यथाः उच्च बुद्धिलब्धि, नैतिकता एवं चरित्र–बल, स्पष्ट जीवन दर्शन, अपने विषय का स्पष्ट ज्ञान, दक्षता आदि इन गणों के साथ–साथ वह अध्ययनशील एवं प्रगतिशील विचारों का पोषक भी हो। आज जब हम अपनी वर्तमान शिक्षा पद्धति पर गम्भीर चिन्तन के साथ दृष्टिपात करते हैं तो हम पाते हैं कि 'शिक्षा' तथा उसके मूल उद्देश्यों पर आज कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है, शिक्षा–संस्थाएं, राजनैतिक अखाड़े के केन्द्र बन गयी हैं; परिणामतः शिक्षा–स्तर दिन प्रतिदिन गिरता ही जा रहा है।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

समस्या कथन :

प्रस्तावित शोध समस्या का कथन है : ''बेसिक शिक्षा परिषद् के प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापनरत बी.टी.सी. तथा विशिष्ट बी.टी.सी. प्रशिक्षित अध्यापकों क ज्ञानार्जन तथा सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन : जिला एटा (उ0प्र0) के विशेष सन्दर्भ में''

अध्ययन के उद्देश्य :

प्रस्तुत अध्ययन निम्न तीन प्रमुख उद्देश्यों की पूर्ति/प्राप्ति के लिए सम्पादित किया गया–

(1) निदर्श अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की वैयक्तिक एवं समाजार्थिक पृष्ठभूमि की जानकारी करना।

(2) दोनों प्रकार के शिक्षकों द्वारा अर्जित ज्ञानार्जन का अध्ययन करना।

(3) ग्रामीण तथा नगरीय पृष्ठभूमि के बेसिक शिक्षा परिषद के बी.टी.सी. तथा विशिष्ट बी.टी.सी. प्रशिक्षित सेवारत अध्यापकों तथा अध्यापिकाओं के जीवन मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना; और यह जानना कि वे किस प्रकार के जीवन मूल्य को अधिक वरीयता प्रदान करते हैं।

(4) अध्यापक–अध्यापिकाओं के 'व्यक्तित्व' तथा विभिन्न जीवन मूल्यों के मध्य 'सम्बन्ध' ज्ञात करना।

(5) शोध–परिकल्पनाओं के परीक्षणोपरान्त निष्कर्ष प्रस्तुत करना।

शोध–परिकल्पनाएं :

प्रस्तुत शोध समस्या के अध्ययन हेतु निम्न तीन 'शून्य परिकल्पनाएं' (Null Hypotheses) परिकल्पित की गयी हैं जिनकी सत्यता तथा वैधता/प्रासंगिकता का परीक्षण शिक्षा–शास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में करके 'निष्कर्ष' स्थापित किए जायेंगे–

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

(1) ग्रामीण तथा नगरीय परिवेश के प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापनरत बी.टी.सी. तथा विशिष्ट बी.टी. सी. प्रशिक्षित अध्यापक–अध्यापिकाओं के 'ज्ञानार्जन (शैक्षिक उपलब्धियों) में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

(2) ग्रामीण तथा नगरीय परिवेश के प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापनरत बी.टी.सी. तथा विशिष्ट बी.टी. सी. प्रशिक्षित अध्यापकों–अध्यापिकाओं के जीवन मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

(3) व्यक्ति का 'व्यक्तित्व' तथा 'जीवन मूल्य' परस्पर घनिष्ठतः सह–सम्बन्धित होते हैं।

पद्धतिशास्त्र/विधि–तंत्र :

यह शोध कार्य ग्रामीण तथा नगरीय परिवेश के जिला एटा (उ0प्र0) के प्राथमिक विद्यालयों के सेवारत 240 (120–120) निदर्श बी.टी.सी. तथा विशिष्ट बी.टी.सी. प्रशिक्षित शिक्षकों (जिनका चयन लिंग व शिक्षा सापेक्ष समान आवृत्ति आधारों पर किया गया है) से किए गए व्यक्तिगत साक्षात्कारों के आधार पर संकलित प्राथमिक तथ्य प्राप्त कर सम्पादित किया गया है; जबकि 'जीवन मूल्यों का अध्ययन' डॉ0 आर0के0 ओझा द्वारा निर्मित 'मूल्य परीक्षण अनुसूची' द्वारा संकलित तथ्यात्मक जानकारियों के आधार पर किया गया है। आँकड़ों की वैधता का मूल्याँकन ''साँख्यकीय पद्धति'' (मध्यमान, मानक विचलन, टी–मूल्य) से किया गया है; जबकि 'व्यक्ति के व्यक्तित्व' तथा जीवन मूल्यों के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करने के लिए ''स्पीयरमैन की कोटिक्रम अन्तर विधि'' द्वारा 'सह–सम्बन्ध' की गणना की गयी है ताकि प्रामाणिक (Verified) निष्कर्ष स्थापित किया जा सके।

आँकड़ा–संकलन, सारणीयन, विवेचन तथा साँख्यकीय विश्लेषण :

तालिका नं0 (1) : निदर्श चयन (लिंगभेद, परिवेश, शैक्षिक उपलब्धि तथा आवृत्ति/प्रतिशत)

क्र0	लिंगभेद	परिवेश	बी.टी.सी. तथा विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षक (उद्देश्यपरक निदर्श चयन विधि)	प्रतिशत
1	अध्यापक	ग्रामीण + नगरीय	(60 + 60) = 120	50.00
2	अध्यापिकाएं	ग्रामीण + नगरीय	(60 + 60) = 120	50.00
	समस्त	–	(120 + 120) = 240	100.00

सुस्पष्ट है कि सेवारतों को विभिन्न परिवर्त्यों यथाः परिवेश, लिंग तथा शिक्षा–उपलब्धि के आधारों पर समान भार तथा महत्व प्रदान करते हुए समान आवृत्तियों व प्रतिशत में चुना गया है ताकि अध्ययन निष्पक्ष तथा मिथ्या झुकाव रहित करना सम्भव हो सके।

उल्लेखनीय है कि 'ज्ञान' मानव की अनमोल निधि है क्योंकि इसके क्षेत्र असीमित हैं। यहाँ 'ज्ञानार्जन' जिसे शिक्षाशास्त्री ''शैक्षिक–उपलब्धि'' (Educational Achievement) भी कहते हैं, का आशय 'अर्जित उपलब्धि' से है; जिसका प्रत्यक्ष सम्बन्ध मानवीय मूल्यों के विकास से होता है। व्यक्तित्व विकास के मूल्यों का वर्गीकरण करते हुए स्पेंगलर[5] ने छः प्रकारों (सैद्धान्तिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक तथा सौन्दर्यात्मक) का बताया है। ज्ञानार्जन/शैक्षिक–उपलब्धि'' पर किए अपने

अध्ययन में कार्टर बी0 गुडे[6] (1961) ने बाद्धिक तथा नैतिक उपलब्धियों को प्रमुख मानते हुए मूल्याँकन हेतु ''स्टूडेन्ट टी–परीक्षण'' को उपयोगी तथा श्रेष्ठ माना है। शोध–अध्येता ने ग्रामीण व नगरीय परिवेश के प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापनरत निदर्श बी.टी.सी. तथा विशिष्ट बी.टी.सी. प्रशिक्षित शिक्षकों के 'ज्ञानार्जन' का अध्ययन (A) तथा (B) दो समूहगत आधारों में विभक्त कर प्रो0 कार्टर महोदय द्वारा अपनायी गयी मध्यमान (m), प्रामाणिक (मानक) विचलन (σ) तथा 't' मान ज्ञात करके किया है इस अध्ययन के तथ्यों पर निम्न तालिका नं0 (2) संक्षिप्त प्रकाश दर्शाती है। ऐसा इसलिए किया गया है क्योंकि ज्ञानार्जन का व्यक्तित्व तथा जीवन मूल्यों से प्रत्यक्ष तथा घनिष्ठ सह–सम्बन्ध होता है।

तालिका नं0 (2) : ज्ञानार्जन/शैक्षिक–उपलब्धियों का तुलनात्मक मूल्याँकन

परिवेश (पृष्ठभूमि)	अर्जित शैक्षिक–उपलब्धियाँ	समूह/वर्ग	मध्यमान (m)	मानक विचलन (σ)	मध्यमान अन्तर	't' परीक्षण का मान	अन्तर की सार्थकता
ग्रामीण तथा नगरीय	बी0टी0सी0/विशिष्ट बी0टी0सी0 अध्यापक–अध्यापिकाएं	अध्यापक (A) तथा अध्यापिकाएं (B)	117.16	14.53	92.98	125.74	0.05 0.01 स्तरों पर सार्थक नहीं
			24.18	6.45			

उक्त तालिका नं0 (2) के प्राथमिक आँकड़ों के विवेचन के प्रकाश में स्पष्ट है कि ग्रामीण तथा नगरीय पृष्ठभूमि के बेसिक शिक्षा परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्यानरत बी.टी.सी. तथा विशिष्ट बी. टी.सी. प्रशिक्षित अध्यापक–अध्यापिकाओं के ज्ञानार्जन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इससे हमारी प्रस्तावित परिकल्पना (1) सत्य तथा वैध (सार्थक) सिद्ध होती है। निम्न तालिका नं0(3) इस तथ्य पर प्रकाश डालती है कि ''किस प्रकार के जीवन मूल्य को वे 'प्रथम वरीयता' प्रदान करते ह?''

तालिका नं0 (3) : 'मूल्य' जिन्हें अध्यापक–अध्यापिकाएं अधिक वरीयताएं देते हैं

क्र0	मूल्यों के प्रकार (स्वरूप)	लिंग सापेक्ष प्रदत्त वरीयताएं निदर्श अध्यापक (आवृत्ति/प्रतिशत)				निदर्श अध्यापिकाएं (आवृत्ति/प्रतिशत)			
		प्रथम	द्वितीय	तृतीय	योग	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	योग
1	सैद्धान्तिक मूल्य	90 (75.00)	25 (20.83)	05 (04.17)	120 (100.00)	89 (74.16)	21 (17.50)	10 (08.34)	120 (100.00)
2	आर्थिक मूल्य	85 (70.83)	12 (10.00)	23 (19.17)	120 (100.00)	84 (70.00)	20 (16.67)	16 (13.33)	120 (100.00)
3	राजनैतिक मूल्य	92 (76.67)	20 (16.67)	08 (06.66)	120 (100.00)	93 (77.50)	17 (14.17)	10 (08.33)	120 (100.00)
4	धार्मिक मूल्य	75 (62.50)	30 (25.00)	15 (12.50)	120 (100.00)	74 (61.67)	34 (28.33)	12 (10.00)	120 (100.00)
5	सामाजिक मूल्य	87 (72.50)	13 (10.83)	20 (16.67)	120 (100.00)	86 (71.67)	27 (22.50)	07 (05.83)	120 (100.00)
6	सौन्दर्यात्मक मूल्य	70 (58.33)	36 (30.00)	14 (11.67)	120 (100.00)	71 (59.17)	34 (28.33)	15 (12.50)	120 (100.00)

(नोट– कोष्ठकों के अन्तर्गत प्रदर्शित आंकड़े प्रतिशतता प्रदर्शित करते हैं)

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रसंगाधीन तलिका नं0 (3) के प्रदत्त वरोयताएं स्तम्भ 'प्रथम' निदर्श अध्यापक एवं स्तम्भ 'प्रथम' निदर्श अध्यापिकाएं की आवृत्तियाँ तथा तत्सम्बन्धित वरीयताओं की प्रतिशतताओं में कोई सार्थक अन्तर दृष्टव्य नहीं है। अतः हमारी प्रस्तावित परिकल्पना (2) सत्य तथा प्रासंगिक सिद्ध होती है। शोध–अध्येता ने यह भी जानने का प्रयास किया है कि 'व्यक्ति के व्यक्तित्व' तथा विभिन्न जीवन मूल्यों के मध्य क्या कोई सम्बन्ध है; अथवा नहीं? इस हेतु साँख्यकीय परीक्षण 'सह–सम्बन्ध' गुणाँक (r) का परिकलन ''स्पीयरमैन की कोटिक्रम अन्तर विधि'' से किया है जो निम्नवत् है :

तालिका नं0 (4) : व्यक्ति क व्यक्तित्व एवं विभिन्न जीवन मूल्यों के मध्य सम्बन्ध

क्र0	''क्या व्यक्ति के व्यक्तित्व का विभिन्न मूल्यों से कोई सम्बन्ध होता है?'' निदर्श सूचनादाताओं के प्रत्युत्तर/अभिमत	सूचनादाता	अध्यापक	अध्यापिका	अध्यापक श्रेणी कोटिक्रम (R_1)	अध्यापिका के श्रेणी कोटिक्रम (R_2)	दोनों श्रेणियों के कोटिक्रमों के संगत अन्तर ($d=R_1-R_2$)	$(\text{अन्तर})^2$ (d^2)
1	नहीं	0	–	–	–	–	–	–
2	हाँ–	240	120	120	–	–	–	–
	(1) सैद्धान्तिक मूल्य		13	13	6	5.5	(+)0.5	0.25
	(2) आर्थिक मूल्य		27	24	1.5	2	(–)0.5	0.25
	(3) राजनीतिक मूल्य		18	16	3	4	(–)1	1.00
	(4) धार्मिक मूल्य		20	22	5	3	(+)2	4.00
	(5) सामाजिक मूल्य		27	30	1.5	1	(+)0.5	0.25
	(6) सौन्दर्यात्मक मूल्य		15	13	4	5.5	(–)1.5	2.25
	समस्त		120	120	–	–	–	$\sum d^2=8.0$

सूत्रः सह–सम्बन्ध गुणाँक $(r)= 1 - \frac{6\sum d^2}{N(N^2-1)} = 1 - \frac{6 \times 8}{6x(36-1)} = 1 - \frac{8}{35}$

$= 1 - 0.228 = (+) 0.772$ (अत्यन्त उच्च कोटि का धनात्मक मान)

निष्कर्षतः चूँकि साँख्यकीय परीक्षण ''सह–सम्बन्ध गुणाँक (r)'' का गणनात्मक मान (+) 0.772 अत्यन्त उच्च कोटि का धनात्मक प्राप्त हुआ है जो यह दर्शाता है कि ''जीवन मूल्यों का व्यक्ति के व्यक्तित्व से घनिष्ठ तथा सकारात्मक सम्बन्ध होता है।'' इस निष्कर्ष से हमारी प्रस्तावित परिकल्पना नं0 (3) सत्य तथा सार्थक सिद्ध होती है।

निष्कर्ष एवं सुझाव : प्रस्तुत सूक्ष्म अनुभवाश्रित अध्ययन के आधार पर निष्कर्ष बतौर कहा जा सकता है कि :

(1) ग्रामीण तथा नगरीय पृष्ठभूमि के बेसिक शिक्षा परिषद् के प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापनरत बी. टी.सी. तथा विशिष्ट बी.टी.सी. प्रशिक्षित अध्यापक–अध्यापिकाएं के ज्ञानार्जन/शैक्षिक उपलब्धियाँ लगभग समान हैं; अर्थात् उनमें कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

(2) ग्रामीण तथा नगरीय परिवेश के बेसिक शिक्षा परिषद् के प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापनरत बी. टी.सी. तथा विशिष्ट बी.टी.सी. प्रशिक्षित अध्यापक–अध्यापिकाओं के जीवन मूल्यों में भी समानता दृष्टव्य है।

(3) व्यक्ति का 'व्यक्तित्व' तथा 'जीवन मूल्य' परस्पर घनिष्ठतः सह–सम्बन्धित होते हैं।

शोध अध्येता का सुझाव है कि (1) बेसिक शिक्षा में बच्चों की नैतिक शिक्षा तथा मूल्यपरक शिक्षा पर विशेष ध्यानाकर्षित किया जाय ताकि भावी सन्तति/निधि; राष्ट्र के विकास की मुख्य धारा में अपना अमूल्य योगदान देने हेतु सक्षम हो सके; (2) बच्चों के व्यक्तित्व विकास तथा जीवन मूल्यों के विकास पर विशेष बल दिया जाय, तथा (3) शासन को चाहिए कि शिक्षकों से केवल शिक्षण कार्य ही कराए जाँय, न कि अन्य कार्य यथाः चुनावी कार्य, मिड–डे मील इत्यादि।

सन्दर्भ–सूची/References :

Jaiswal S.R. ; Education for Social, Moral and Spiritual Values, Bhartiya Shiksha, Shodh Patrika, New Delhi, 1(2), 1982, p.89

Child J.L. ; Education and Moral, Apleton Century-Craft Publishers, Newyork, 1997, p.33

Mallarddy M. ; Crisis of Values, Progressive Eduational Herald, New Delhi, 2007, p.101

Basic Education in U.P. : Baseless and Non-Significant ; 'The Hindustan Times', News Paper, New Delhi, Jan. 21, 2018

Spengler E.W. ; Social & Educational Psychology, Harper and Raw Publications, Newyork, 1960, p.151

Carter B.G. ; Dictionary of Education, Mc-Graw Hill Book-Co. (Pvt. Ltd.), Newyork, 1961, p.317

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies